**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030**
**Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 316-317**

# संस्कृत मुक्तककाव्य स्वरूप : एक विवेचन

**डॉ0 अमित शर्मा**
सहायक प्रवक्ता (संस्कृत), सी0 आर0 किसान महाविद्यालय, जीन्द, हरियाणा, भारत।

## प्रस्तावना

विश्व की प्राचीनतम भाषा होने का गौरव संस्कृत भाषा को प्राप्त है। प्राचीनकाल में संस्कृत भाषा आधुनिक व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं के समान ही प्रयोग की जाती थी। कालक्रम में संस्कृत भाषा से ही मध्यकालीन पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं तथा आधुनिक हिन्दी, पंजाबी, मराठी, तमिल, तेलगु इत्यादि अन्य भारतीय भाषाओं का उद्भव हुआ। अतः संस्कृत भाषा को अन्य सभी भाषाओं की जननी कहा जाता है। संस्कृत भाषा के समान संस्कृत साहित्य भी अत्यधिक विशाल एवं प्राचीनतम है। संस्कृत साहित्य प्राचीनता के साथ–साथ विविधताओं से भी परिपूर्ण है। काव्य भी संस्कृत साहित्य का एक अभिन्न अंग है। काव्य के श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत आने वाले पद्य काव्य का एक उपभेद मुक्तककाव्य भी है। इसी मुक्तककाव्य के स्वरूप का वर्णन इस शोध–पत्र में किया गया है।

## काव्य शब्द का अर्थ एवं परिभाषा

काव्य का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है 'कवेः कर्म काव्यम्'। कवि शब्द से ण्यत् प्रत्यय करने पर काव्य की निष्पत्ति होती है।[1] काल एवं परिस्थिति के अनुरूप ही काव्य के व्यापक स्वरूप की परिभाषा विद्वानों द्वारा की गई है। यथा भामह के अनुसार 'शब्दार्थौसहितौ काव्यम्'[2], वामन के अनुसार 'गुणालंकारयुक्तौ शब्दौ काव्यम्'[3], दण्डी के मतानुसार 'इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली काव्यम्'[4], आचार्य मम्मट के कथनानुसार 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि,[5] आनन्दवर्धन के अनुसार 'ध्वन्यात्मकं वाक्यं काव्यम्'[6], विश्वनाथ के मत में 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'[7], इस प्रकार विभिन्न काव्यशास्त्रियों द्वारा 'काव्य' शब्द को परिभाषित किया गया है। अतः काव्यरूपी विशाल वटवृक्ष की शब्द, अर्थ, गुण, दोष, रीति, छन्द एवं अलंकार ये सभी शाखाएं हैं तथा रस इस काव्य रूपी वृक्ष को जीवनशक्ति प्रदान करने का कार्य करता है।[8] पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार जीवन की समीक्षा,[9] मार्मिक क्षणों की अभिव्यक्ति एवं मनोभावों का निरन्तर प्रवाहित होना ही काव्य है।[10] काव्य की उत्पति विश्व की प्रथम पुस्तक ईश्वरीय ज्ञान वेद से ही परिलक्षित है। परन्तु विद्वानों ने रामायण के 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शश्वती समाः' इस श्लोक को ही काव्य का सर्वप्रथम श्लोक माना है।[11]

## काव्य के भेद तथा उपभेद

मुख्यतया काव्य को श्रव्य एवं दृश्य रूप से दो भागों में विभक्त किया गया है। दृश्यकाव्य के अन्तर्गत रूपक तथा उसके दस भेदों की गणना की जाती है एवं श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत गद्य, पद्य एवं चम्पू ये उपभेद किये गए हैं। तत्पश्चात् पद्यकाव्य के अन्तर्गत मुक्तक, युग्मक, सन्दामितक, कुलापक एवं कुलक ये पाँच उपभेद हैं। इस प्रकार मुक्तककाव्य पद्यकाव्य का ही उपभेद है।

## मुक्तक शब्द की निष्पत्ति एवं अर्थ

मुक्तककाव्य पद्यकाव्य का ही एक उपभेद है। पद्य रचना करते समय छन्दों को ध्यान में रखा जाता है एवं प्रत्येक रचना में कोई न कोई प्रसंग अवश्य होता है किन्तु मुक्तककाव्य में किसी भी प्रकार के प्रसंग अथवा संदर्भ का शासन नहीं रहता। अतः सन्दर्भ आदि बाह्य उपकरणों से मुक्त होने के कारण ही इसे मुक्तककाव्य कहा जाता है।

'मुक्त' शब्द से संज्ञा अर्थ से 'कन्' प्रत्यय करने पर 'मुक्तक' शब्द की निष्पत्ति होती है।[12] 'मुक्तक' शब्द में भूतकालपरक कर्मकारक 'क्त' प्रत्यय निष्ठा अर्थ में होता है।[13] 'मुक्तक' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है 'मुच्यतेस्मेतिमुक्तम्', मुक्तं ह्रस्वं द्रव्यं मुक्तम्। अर्थात् जो छोड़ा जा चुका हो अथवा जिसका कलेवर छोटा हो वह द्रव्य विशेष मुक्तक कहलाता है। मुक्तक शब्द का प्रयोग निम्नलिखित अर्थों में किया जाता है–

**'विनाकृतं विरहितं व्यवच्छिन्नं विशेषितम्।**
**भिन्नस्यादथ निर्व्यूहे मुक्तं योवातिशोभनः।।[14]**

इस आधार पर कहा जा सकता है कि जो पद्यविशेष निरपेक्ष होते हुए भी पूर्ण अर्थ को अभिव्यक्त कर सके एवं काव्यहेतु अपेक्षित अन्य रस एवं चमत्कारादि विशेषताओं से परिपूर्ण हो तथा निजरमणीयता के माध्यम से हृदय की मुक्तावस्था रूपी आनन्द को प्रदान करने में समर्थ हो वह पद्यविशेष ही मुक्तक है।

## मुक्तककाव्य का लक्षण

'अग्निपुराण' के अनुसार मुक्तककाव्य में चमत्कारशक्ति की प्रधानता रहती है।[15] आचार्य आनन्दवर्धन के अनुसार ''पूर्वापरानिरपेक्षेणापि हि येन रस चर्वणा क्रियते तदैव मुक्तकम्''।[16] अर्थात् जिस रचना में प्रत्येक श्लोक स्वयं में पूर्ण हो तथा जो पूर्वापर प्रसंग से रहित होने पर भी निज अर्थाभिव्यक्ति एवं रसनिष्पत्ति में समर्थ हो वही मुक्तककाव्य है।

**प्रबन्धे मुक्तके वापि रसादीन् बद्धुमिच्छता।**
**तत्रमुक्तेषु रसबन्धाभिनिवेशिनः कवेस्तदाश्रममौचित्यम्।।[17]**

अर्थात् प्रबन्ध अथवा मुक्तककाव्य में रस तथा निबन्धन करना चाहने वाले कवि को चाहिए कि वह रस के विरोधियों का परिहार करने का प्रयास करे।

## मुक्तककाव्य का उद्भव एवं विकास

संस्कृत साहित्य की प्रत्येक विधा का उद्गम स्थल मूलरूप से वेद

ही हैं। ऋग्वेद को मुक्तककाव्य का उद्गमस्थल कहा जाता है। यथा इन्द्र के प्रति एक ऋचा में वर्णित है–

**'तुञ्जे–'तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।**
**न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्।[18]**

प्रजापति की स्तुति में हिरण्यगर्भ सूक्त[19] मुक्तककाव्यका एक उत्कृष्ट दृष्टान्त है। अथर्ववेद में निज प्रिया को प्राप्त करने को आतुर प्रेमी का वर्णन अति प्राकृत, सहज एवं सरल रूप से किया गया है। यथा–''कामस्तदग्रे समवर्तत मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।[20] वैदिककाल में वीरों की गाथाएँ गायी जाती थी। यथा– धम्मपद की गाथा, थेर गाथा आदि। सतसई गाथा में मुक्तककाव्य का वास्तविक स्वरूप देखने को मिलता है। सामान्यतः जनता का जीवन, आचार, धर्म एवं काम का जो स्वरूप मुक्तककाव्यों में देखने को मिलता है वह स्वरूप अन्यत्र कहीं भी प्रत्यक्षरूप से देखने को नहीं मिलता।[21] भर्तृहरि के शतकत्रय नीति, श्रृंगार एवं वैराग्यशतक मुक्तक की विकासशील परम्परा के अन्तर्गत आते हैं। 'अमरूकशतक' श्रृंगारिक मुक्तक का ज्वलंत दृष्टान्त है। बिल्हण की 'चोरपञ्चाशिका' तथा उसके उपरान्त गोवर्धनाचार्य की 'आर्यासप्तशती' को संस्कृत मुक्तकों के इतिहास में विशेष स्थान प्राप्त है। पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा रचित मुक्तकों ने संस्कृत मुक्तककाव्य की सूदीर्घ एवं उत्कृष्ट परम्परा स्थापित की है।

प्राचीन समय में मुक्तक एवं गीतिकाव्य में कोई अन्तर स्पष्ट नहीं किया गया था। यद्यपि गीतिकाव्य का उद्भव भी मुक्तक से ही माना जाता है किन्तु कलात्मकता एवं रूढ़ीवादिता आदि के कारण मुक्तक की भावात्मक विधा का गीतिकाव्य से एक भिन्न रूप स्थापित हो गया। डॉ. मनमोहन गौतम के कथनानुसार ''मुक्तक यदि उपवन की पुष्पराशि का चुना हुआ स्तवक है तो गीति उसका द्रवीभूत मकरन्द है।[22] भाषा की संक्षिप्तता एवं कल्पना की समाहार शक्ति गीति एवं मुक्तक दोनों में प्रधान मानी जाती है। आकारलघुता, स्वतन्त्रता, निरपेक्षता, अर्थद्योतन आदि की दोनों में समानता रहती है किन्तु गीति को भावप्रधान एवं मुक्तक को कलाप्रधान काव्य माना जाता है।

मुक्तककाव्य में भावस्वातन्त्र्य, लावण्य एवं श्रृंगारिकता, प्रसाद एवं माधुर्य गुण, गीतितत्व, कवि हृदयगत प्रस्पुफरण, प्रकृति चित्रण, नैतिकआदर्श, दार्शनिक तत्व आदि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

## मुक्तककाव्य के भेद

मुक्तककाव्य मुख्यतः दो भागों में विभक्त है–लौकिक एवं धार्मिक। लौकिक मुक्तककाव्य के अन्तर्गत लोक सम्बन्धित विषय ही रचना का आधार होते हैं। भर्तृहरि के शतकत्रय, अमरूक का अमरूकशतक, चोरपञ्चाशिका आदि लौकिक मुक्तककाव्य के दृष्टान्त हैं। धार्मिक मुक्तक काव्यों में किसी विशिष्ट देव की स्तुति की प्रमुखता रहती है। अतः इसे स्तोत्र संज्ञा भी प्रदान की गई है। सूर्यशतक, चण्डीशतक, शिवस्तुति इत्यादि। इन दो भेदों के अतिरिक्त छन्द संख्या के आधार पर मुक्तक के मुक्तक, युग्मक, सन्दामितक (विशेषक), कलापक एवं कुलक ये पाँच भेद हैं।[23] इतिवृत्त की सत्ता के आधार पर मुक्तक के शुद्ध, चित्र, क्योत्थ, संविधानकम्, आख्यानकवान् ये पाँच भेद हैं।[24]

इस प्रकार संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मुक्तककाव्य संस्कृत साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। संस्कृत साहित्य में काव्य प्रयोजन के अन्तर्गत 'सघः परिनिवृत्तये' के अतिरिक्त यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, शिवेतरक्षति, कान्तासम्मित उपदेश आदि प्रयोजन बताए गए हैं।[25] एवं ये प्रयोजन मुक्तक में समन्वित रूप से पाए जाते हैं। जीवनव्यवहार, सत्य, शान्तिपरक उपदेश आदि की स्थापना मुक्तक काव्यों में बहुल रूप से की गई है। मुक्तककाव्य की लोकप्रियता आधुनिककाल में इसलिए भी बढ़ गई है क्योंकि इसके अन्तर्गत कवि को विभिन्न विषयों पर छन्दोबद्ध रचना करने की स्वतन्त्रता होती है। मुक्तककाव्य में अधिक साहित्यिक उपकरणों का प्रयोग नहीं किया जाता फिर भी ये काव्य व्यक्ति, समाज, देश एवं विश्व का मार्गदर्शन करने में सहायक होते हैं। सामाजिक परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण कार्य मुक्तक रचनाओं के माध्यम से अत्याधिक सरलता से किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, नीति, ज्ञान–विज्ञान, व्यंग्य, हास–परिहास, समीक्षा आदि सभी भावों को बड़ी ही सहजता से अभिव्यक्त किया जा सकता है। मुक्तककाव्य की पूर्वोक्त विशेषताओं के कारण ही आज के इस भौतिकतावादी युग में विद्वान्–वर्ग मुक्तक रचना के पथ पर निरन्तर अग्रसर है।

## संदर्भ


1. सस्कृत हिन्दी शब्दकोष, पृ. 215.
2. काव्यालंकार 1.16.
3. काव्यालंकार सूत्र 1.2.7
4. काव्यादर्श 1.10.
5. काव्यप्रकाश 1.4
6. ध्वन्यालोक 1.1.
7. साहित्यदर्पण 1.3.
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला पृ. 971,
9. Poem is at bottom a criticism of life- Methew Arnold
10. Poetry is the spontaneous over Flow of powerful Feelings. It takes its origin from cmotions recollected in tranquility- Word sworth
11. रामायण 1.2.15.
12. संज्ञायाम् कन्। पा. सू. 5.3.87.
13. तयोरेवकृत्यक्तखलर्थाः। पा. सू. 3.4.70.
14. शब्दकल्पद्रुमकोश, केशव कृत।
15. मुक्तकं श्लोक एवैकश्चमत्कारक्षमः सताम्–337.36, अग्निपुराण।
16. ध्वन्यालोक। तृतीय उद्योत, पृ. 387
17. ध्वन्यालोक 173
18. ऋग्वेद 1.7.7.
19. ऋग्वेद 10.121.
20. अथर्ववेद 19.52
21. गाथा सतसई, हाल, 4.1.
22. महाकाव्य का स्वरूप–विकास, पृ. 115.
23. पन्थादिभिश्चतुर्कशान्तिः कुलकम्। काव्यानुशासन, 8.12
24. काव्यमीमांसा, नवम अध्याय।
25. ''काव्यं यशसेऽर्थ कृतेव्यवहारविदे .... कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे'' काव्यप्रकाश 1.1.2, पृ. 6.